2 हींगवाला

इस पाठ द्वारा लेखिका ने हींग बेचने वाले खान के चरित्र की उदारता, विश्वसनीयता, धार्मिक सद्भावना एवं आत्मीयता का वर्णन करते हुए यह प्रेरणा दी है कि धर्म तथा जाति के नाम पर भेदभाव या दंगे करना उचित नहीं है। आपसी सद्भाव से ही जीवन में सुख-शांति बनी रहती है।

साहस और धैर्य ऐसे गुण हैं, जिनकी कठिन परिस्थितियों में बड़ी आवश्यकता होती है। —महात्मा गांधी

"अम्मा हींग लेगा?" कहता हुआ लगभग 35 साल का एक खान आँगन में आकर रुक गया। पीठ पर बाँधे हुए पीपे को खोलकर उसने नीचे रख दिया और मौलसिरी के नीचे बने हुए चबूतरे पर बैठ गया। भीतर बरामदे से एक नौ-दस वर्ष के बालक ने बाहर निकलकर उत्तर दिया, "अभी कुछ नहीं लेना है, जाओ।"

पर खान भला क्यों जाने लगा? वह बैठ गया और अपने साफे के छोर से हवा करता हुआ बोला, "अम्मा, हींग लो अम्मा। हम अपने देश कूँ जाता है, बहुत दिनों में लौटेगा।" सावित्री रसोईघर से हाथ धोकर बाहर आई और बोली, "हींग तो बहुत-सी ले रखी है खान। अभी पंद्रह दिन हुए नहीं, तुमसे ही तो हींग ली थी।" वह उसी स्वर में फिर बोला, "हेरा हींग है माँ, हम तुम्हारे हाथ की बोहनी माँगता है। एक ही तोला ले लो, पर लो ज़रूर।" इतना कहकर फ़ौरन एक डिब्बा सावित्री के सामने सरकाते हुए कहा, "तुम और कुछ मत देखो माँ, यह हींग एक नंबर है। हम तुम्हें धोखा नहीं देगा।"

सावित्री बोली, "पर इतनी हींग लेकर क्या करूँगी! ढेर सारी तो रखी है।" खान ने कहा, "कुछ भी ले लो अम्मा। हम देने के लिए आया है, घर में पड़ी रहेगी। हम अपने देश कूँ जाता है। खुदा जाने कब लौटूँगा।" और खान बिना उत्तर की प्रतीक्षा किए हींग तौलने लगा। इस पर सावित्री के बच्चे बहुत नाराज़ हुए। सभी बोल उठे, "मत लेना माँ, तुम कभी न लेना। ज़बरदस्ती तौले जा रहा है।" जब

खान ने हींग तौलकर पुड़िया बनाकर सावित्री के सामने रख दी, तब सबसे छोटे बच्चे ने पुड़िया उठाकर खान की ओर फेंकते हुए कहा, "ले जाओ, हमें नहीं लेना है। चलो माँ, भीतर चलो।"

सावित्री ने किसी की बात का उत्तर न दे, हींग की पुड़िया उठा ली और पूछा, "कितने पैसे हुए खान?" "पैंतीस पैसे, अम्मा।" खान ने उत्तर दिया। सावित्री ने सात पैसे तोले के भाव से पाँच तोले का दाम पैंतीस पैसे लाकर खान को दे दिए। खान सलाम करके चला गया। पर बच्चों को माँ की यह बात अच्छी न लगी।

बड़े लड़के ने कहा, "माँ! तुमने खान को वैसे ही पैसे दे दिए, हींग की कुछ ज़रूरत नहीं थी।" छोटा माँ से चिढ़कर बोला, "दो माँ, पैंतीस पैसे हमको भी दो। हम बिना लिए न रहेंगे।" लड़की जिसकी उम्र आठ साल की थी, बड़े गंभीर स्वर में बोली, "तुम माँ से पैसा न माँगो। वे तुम्हें न देंगी। उनका बेटा वही खान है।" सावित्री को इन बच्चों की बातों से हँसी आ रही थी। उसने अपनी हँसी दबाकर बनावटी क्रोध से कहा, "चलो-चलो, बड़ी बातें बनाने लग गए हो। खाना तैयार है, खाओ।"

छोटा बोला, "पहले पैसे दो। तुमने खान को दिए हैं।" सावित्री ने कहा, "खान ने पैसे के बदले में हींग दी है। तुम क्या दोगे?" छोटा बोला, "मिट्टी देंगे।"

सावित्री हँस पड़ी, "अच्छा चलो, पहले खाना खा लो, फिर मैं रुपया तुड़वाकर तीनों को पैंतीस-पैंतीस पैसे दूँगी।"

खाना खाते-खाते हिसाब लगाया गया। एक रुपया में सौ पैसे, पैंतीस पैसे रतन लेगा, पैंतीस पैसे मुन्नी लेगी, छोटे के लिए तो तीस पैसे बचेंगे। छोटा बिगड़ पड़ा "कभी नहीं, मैं तीस पैसे नहीं लूँगा।" दोनों में मारपीट हो चुकी होती, यदि मुन्नी तीस पैसे स्वयं लेना स्वीकार न कर लेती।

कई महीने बीत गए। सावित्री की सब हींग खत्म हो गई। इसी बीच होली आई। होली के अवसर पर हिंदू-मुसलमानों में बड़े भयंकर रूप से दंगा हो गया। बहुत-से हिंदू-मुसलमान मारे गए। मरने वालों में दो खान भी थे। सावित्री कभी-कभी सोचती, हींगवाला खान तो नहीं मार डाला गया? न जाने क्यों उस हींग वाले खान की याद उसे प्राय: आ जाया करती थी। एक दिन सवेरे-सवेरे उसी मौलसिरी के पेड़ के नीचे चबूतरे पर बैठी वह कुछ बुन रही थी। उसने सुना, उसके पति किसी से कड़े स्वर में कह रहे हैं, "क्या काम है? भीतर मत जाओ। यहाँ आओ।" उत्तर मिला, "हींग है, हेरा हींग।" और खान तब तक आँगन में सावित्री के सामने पहुँच चुका था। खान को देखते ही सावित्री ने कहा, "बहुत दिनों में आए खान। हींग तो कब की खत्म हो गई।"

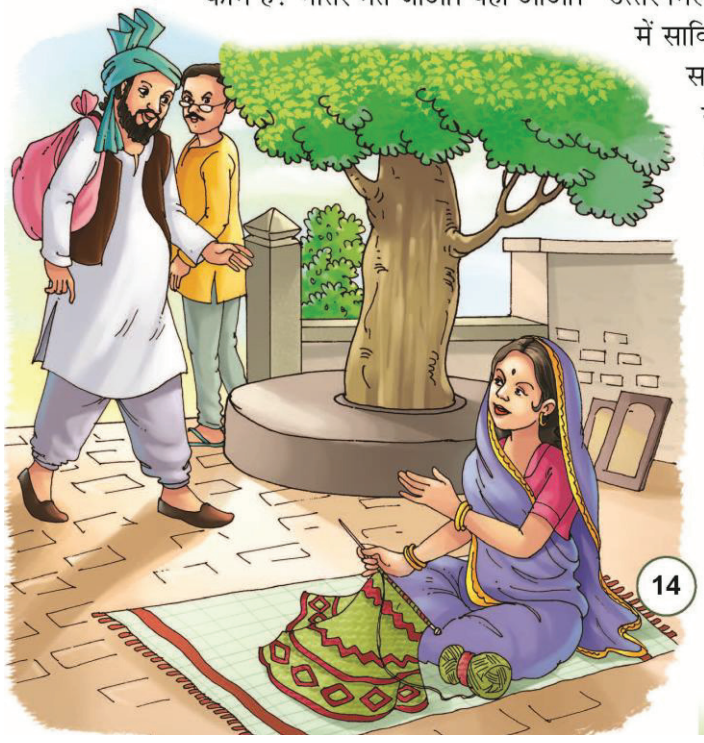

खान बोला, "देश कूँ गया था, अम्मा! परसूँ ही तो लौटा हूँ।"

सावित्री बोली, "यहाँ तो हिंदू-मुसलमानों में बहुत ज़ोरों का दंगा हो गया।" खान बोला, "सुना। समझ नहीं है, लड़नेवालों में।" सावित्री बोली, "खान, तुम यहाँ चले आए। तुम्हें डर नहीं लगा?" दोनों कानों पर हाथ रखते हुए खान बोला, "ऐसी बात मत करो, अम्मा। बेटे को भी क्या माँ से डर हुआ है, जो मुझे होता।" इसके बाद ही उसने अपना डिब्बा खोला और एक

छटाँक हींग तौलकर सावित्री को दे दी। रेज़गी दोनों में से किसी के पास न थी। खान पैसा फिर आकर ले जाएगा। सावित्री को सलाम करके वह चला गया।

दशहरा हिंदुओं का बड़ा त्योहार होता है। पिछली होली पर दंगा हो चुका था। हिंदू होली न जला सके थे। दशहरा का दिन उत्साह के साथ मनाने की तैयारी में थे। चार बजे शाम को काली का जुलूस निकलने वाला था। पुलिस का काफ़ी प्रबंध था। सावित्री के बच्चों ने कहा, "हम भी काली का जुलूस देखने जाएँगे।" सावित्री के पति शहर से बाहर गए थे। सावित्री स्वभाव से भीरु थी। उसने बच्चों को पैसों का, खिलौनों का, सिनेमा का, न जाने कितने प्रलोभन दिए, पर बच्चे न माने, सो न माने। नौकर रामू भी जुलूस देखने को बहुत उत्सुक हो रहा था। उसने कहा, "भेज दो न माँ जी, मैं अभी दिखाकर लिए आता हूँ।" लाचार होकर सावित्री को काली का जुलूस देखने के लिए बच्चों को भेजना पड़ा। उसने बार-बार रामू को ताकीद दी कि दिन रहते ही बच्चों को लेकर लौट आए।

बच्चों को भेजने के साथ ही सावित्री उनके लौटने की प्रतीक्षा करने लगी। देखते-ही-देखते दिन ढल चला। अँधेरा भी बढ़ने लगा, पर बच्चे न लौटे। अब सावित्री को न भीतर से चैन था, न बाहर से। इतने में ही कुछ आदमी सड़क पर भागते हुए जान पड़े। वह दौड़कर बाहर आ गई। उन आदमियों से पूछा, "ऐसे भागे क्यों जा रहे हो? काली का जुलूस तो निकल गया न?"

एक आदमी बोला, "दंगा हो गया माँ जी! दंगा, बड़ा भारी दंगा।" कहता हुआ वह तेज़ी से आगे बढ़ गया। सावित्री के हाथ-पाँव ठंडे पड़ गए। इसी समय कुछ और लोग तेज़ी से आते हुए दिखे।

सावित्री ने उन्हें भी रोका। उन लोगों ने कहा, "दंगा हो गया है।"

अब सावित्री क्या करे? उन्हीं में से एक से उसने कहा, "भाई, तुम मेरे बच्चों की खबर ला दो। दो लड़के हैं और एक लड़की। मैं तुम्हें मुँह माँगा इनाम दूँगी।" एक देहाती ने जवाब दिया, "का हम तुम्हारे बच्चन का पहिचानित है, माँ जी? फिर जान से पियारा कुछो नाही होत।" यह कहकर वे चले गए।

सावित्री सोचने लगी, सच तो है, इतनी भीड़ में भला देहाती मेरे बच्चों को खोजे भी कैसे? पर अब करे भी तो क्या करे? उसे रह-रहकर अपने पर क्रोध आ रहा था। आखिर उसने बच्चों को भेजा ही क्यों? वे तो बच्चे ठहरे, ज़िद तो करते ही, पर भेजना उसके हाथ की बात थी।

सावित्री पागल-सी हो गई। बच्चों की मंगल-कामना के लिए उसने सभी देवी-देवता मना डाले। शोरगुल बढ़कर शांत हो गया। रात के साथ नीरवता बढ़ गई, पर बच्चे लौटकर न आए। सावित्री उदास हो गई और फूट-फूटकर रोने लगी। इसी समय उसे वही चिरपरिचित स्वर सुनाई पड़ा, "अम्मा।"

सावित्री दौड़कर बाहर आई। उसने देखा, उसके तीनों बच्चे खान के साथ सकुशल लौट आए हैं।

खान ने सावित्री को देखते ही कहा, "बख्त अच्छा नहीं अम्मा। बच्चों को ऐसी भीड़-भाड़ में बाहर न भेजा करो।" बच्चे दौड़कर माँ से लिपट गए।

–श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान